संपादकीय

निजी हित साधने का न बने हथियार

समाज के कमजोर और न्याय तक पहुंच से वंचित तबकों के हितों की रक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय द्वारा अस्सी के दशक में शुरू की गयी जनहित याचिका, जो पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन के नाम से ज्यादा चर्चित है, प्रणाली आज जनता के मौलिक अधिकारों की रक्षा और इनके प्रति उदासीन कार्यपालिका और भ्रष्ट नौकरशाही को कटघरे में लाने के लिए एक कारगर हथियार बन चुकी है। लेकिन दुरुपयोग के चलते न्यायालय ने कई मामलों में इसे पॉलिटिकल इंटरेस्ट लिटिगेशन या प्राइवेट इंटरेस्ट लिटिगेशन बताते हुये खारिज भी कर दिया। फलतः उच्चतम न्यायालय ने ऐसी याचिकाओं पर कड़ा रुख अपनाना शुरू कर दिया है। अब अगर न्यायालय को पहली नजर में लगता है कि अमुक जनहित याचिका पब्लिसिटी या प्राइवेट हित के लिए है तो वह उसे खारिज ही नहीं कर रहा बल्कि याचिकाकर्ताओं पर जुर्माना भी लगा रहा है। कई बार याचिकाकर्ता किसी विषय के बहुत अधिक विवादास्पद होने पर सिर्फ अखबार की खबरों के आधार पर ही आधी-अधूरी जानकारी के साथ जनहित याचिका दायर कर रहे हैं। कई मामलों में एक निश्चित अवधि के लिए याचिकाकर्ताओं पर ऐसी याचिका दायर करने पर रोक भी लगाई गई है। मौलिक अधिकारों की रक्षा के नाम पर संविधान के अनुच्छेद 32 और अनुच्छेद 226 के अंतर्गत दायर होने वाली जनहित याचिकाओं में कमी नहीं आई है।

इस समय उच्चतम न्यायालय में ही 2880 से ज्यादा ऐसी याचिकाएं लंबित हैं। इनमें से पर्यावरण की रक्षा और प्रदूषण संबंधी कुछ जनहित याचिकाएं तो 1984-85 से न्यायालय में लंबित हैं। इनमें लगातार फैसले और अंतरिम आदेश आते रहते हैं। जुलाई के अंत तक पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय में पीआईएल की श्रेणी में सबसे ज्यादा 1312 मामले लंबित थे। देश के संविधान या किसी कानून में जनहित याचिका परिभाषित नहीं है। यह व्यवस्था नागरिकों को संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय की व्याख्या की देन है। इस व्याख्या ने मौलिक अधिकारों के दायरे का भी विस्तार किया है और निजता के अधिकार, भोजन का अधिकार और स्वास्थ्य सुविधा के अधिकार को इसी के दायरे का हिस्सा माना है। कोरोना वैश्विक महामारी में कामगारों से लेकर पेगासस जासूसी कांड और पर्यावरण से लेकर रैन बसेरों की स्थिति जैसे मामले जनहित याचिकाओं के कारण ही सुर्खियों में आये हैं। इन मामलों में न्यायिक हस्तक्षेप के कारण कार्यपालिका तथा नौकरशाही को इस ओर तत्परता से कदम उठाने पड़े। जनहित याचिकाओं की शुरुआत 1980 के दशक में बिहार की जेलों में विचाराधीन कैदियों की अमानवीय स्थिति और भागलपुर जेल में कैदियों की आंख फोड़ने की घटना शीर्ष अदालत के संज्ञान में लाए जाने के साथ हुई थी। इनके अलावा पूर्व नौकरशाह और सैन्य अधिकारी, जनप्रतिनिधि, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और आम जनता भी जनहित याचिका दायर करती रहती है। इनमें से अनेक मामलों में उन्हें सफलता मिली है। लोकपाल की नियुक्ति , देश में पुलिस सुधार से लेकर लोकपाल कानून का सृजन और लोकपाल, सीवीसी तथा सीबीआई प्रमुख के पदों पर नियुक्ति जैसे अनेक मुद्दों पर इस प्रक्रिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनहित याचिकाओं के माध्यम से बोफोर्स तोप सौदे, राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद, 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन, कोयला खदान आवंटन, बंधुआ मजदूर, जेलों में क्षमता से अधिक कैदियों का होना, मानसिक रोगी अस्पतालों में रोगियों की दुर्दशा, कोरोना महामारी में अस्पतालों में जान गंवाने वाले व्यक्ति यों के शवों के प्रति अनादर मुद्दे शामिल हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाहुबल, धनबल से मुक्त कराने, अदालत से दोषी ठहराये जाने की तारीख से सांसदों-विधायकों की सदस्यता खत्म होने और सांसदों-विधायकों के खिलाफ लंबित आपराधिक मुकदमों की तेजी से सुनवाई जैसी व्यवस्था भी जनहित याचिकाओं की देन हैं।

-अनूप भटनागर

तीन दिन में सात डॉलर महंगा हुआ क्रूड, भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं

नईदिल्ली । अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने का सिलसिला लगातार जारी है। इस सप्ताह पिछले तीन कारोबारी दिनों में ही कच्चे तेल की कीमतों में प्रति बैरल करीब सात डॉलर की तेजी आ चुकी है। कीमतों में आई उछाल की वजह से अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड प्रति बैरल 72 डॉलर के स्तर को पार कर गया है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में आई इस जोरदार तेजी के बावजूद भारतीय उपभोक्ताओं के लिहाज से राहत की बात यह है कि यहां पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। सरकारी ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने आज भी पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं किया है, जिसकी वजह से राजधानी दिल्ली में आज भी पेट्रोल 101.49 रुपये प्रति लीटर की दर पर और डीजल 88.92 रुपये प्रति लीटर के दर पर बिक रहा है।

बताया जा रहा है कि मैक्सिको की खाड़ी में कच्चे तेल के उत्पादन में कमी आने की वजह से पहले से ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की आवक में कमी आई है। इसके साथ ही अमेरिकी तेल भंडार में आई गिरावट के बाद उसकी भरपाई के लिए पिछले कारोबारी सत्र में बड़े पैमाने पर तेल की खरीद होने से कच्चे तेल के भाव ने और भी तेजी का रास्ता पकड़ लिया। पिछले कारोबारी सत्र में ब्रेंट क्रूड प्रति बैरल 1.20 डॉलर की तेजी के साथ 72.25 डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह अमेरिकी वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड (डब्ल्यूटीआई क्रूड) भी 0.82 डॉलर प्रति बैरल की तेजी के साथ 68.36 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर बंद हुआ। बता दें कि पिछले सप्ताह मैक्सिकन ऑयल कंपनी पेट्रोलियोस मैक्सिकानोस पेमेक्स के एक कच्चे तेल के प्लेटफार्म पर आग लग गई थी।

याहू ने भारत में अपनी समाचार वेबसाइटों को बंद किया

नई दिल्ली। याहू ने भारत में डिजिटल सामग्री का परिचालन और प्रकाशन करने वाली मीडिया कंपनियों के विदेशी स्वामित्व को सीमित करने वाले नए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नियमों के कारण देश में अपनी समाचार वेबसाइटों को बंद कर दिया है। इसमें याहू न्यूज, याहू क्रिकेट, फाइनेंस, एंटरटेनमेंट और मेकर्स इंडिया शामिल हैं। भारत में उपयोगकर्ताओं के लिए याहू ई-मेल और सर्च सेवाएं प्रभावित नहीं होंगी। याहू वेबसाइट ने एक नोटिस में कहा, '26 अगस्त, 2021 से याहू इंडिया अब कंटेंट प्रकाशित नहीं करेगी। आपका याहू खाता, मेल और खोज अनुभव किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होंगे और पहले की तरह काम करेंगे। हम आपके समर्थन के लिए धन्यवाद करते हैं। अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनी वेरिजॉन ने 2017 में याहू का अधिग्रहण किया था। याहू ने कहा कि उसने 26 अगस्त 2021 से भारत में सामग्री का प्रकाशन रोक दिया है और देश में याहू के कंटेंट परिचालन को बंद कर दिया गया है। नोटिस में कहा गया, ''हमने जल्दबाजी में यह निर्णय नहीं लिया है। याहू इंडिया भारत में नियामक कानूनों में बदलाव से प्रभावित हुआ, जो भारत में डिजिटल कंटेंट को संचालित और प्रकाशित करने वाली मीडिया कंपनियों के विदेशी स्वामित्व को सीमित करता है। याहू का भारत के साथ एक लंबा जुड़ाव रहा है।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान टेड डेक्सटर का निधन

लंदन। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान टेड डेक्सटर का बीमारी के बाद वोल्वरहैंपटन में निधन हो गया। मेरिलबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) ने गुरुवार को यह जानकारी दी। वह 86 बरस के थे। एमसीसी ने कहा, ''हाल में बीमारी के बाद कल दोपहर वोल्वरहैंपटन के कॉम्पटन होसपाइस में उनका निधन हो गया। इस दौरान उनका परिवार उनके साथ मौजूद था।''

मध्यक्रम के बल्लेबाज और मध्यम तेज गति के गेंदबाज डेक्सटर ने 1958 से 1968 के बीच 62 टेस्ट खेले और इस दौरान 30 मैचों में टीम की अगुआई की। उन्होंने 47.89 के औसत से 4502 रन बनाने के अलावा 66 विकेट भी चटकाए।

तेज गेंदबाजी के खिलाफ दबदबा बनाने के लिए पहचाने जाने वाले डेक्सटर ने नौ शतक जड़े जिसमें से छह पारियां 140 रन से अधिक की रहीं। इस साल उन्हें आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) क्रिकेट हाल आफ फेम में शामिल किया गया था। डेक्सटर एमसीसी के अध्यक्ष भी रहे। संन्यास के बाद डेक्सटर ने पत्रकार और प्रसारणकर्ता की भूमिका निभाई। वह इंग्लैंड के चयन समिति के अध्यक्ष भी रहे।

भारतीय टीम मात्र 78 रन पर ढेर, इंग्लैंड को 42 रनों की बढ़त

लीड्स। जेम्स एंडरसन की अगुवाई में इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों ने भारतीय टीम को तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के पहले ही दिन बुधवार को दूसरे सत्र में पहली पारी में 40.4 ओवर में मात्र 78 रन पर ढेर कर दिया। इंग्लैंड ने इसके बाद स्टंप्स तक बिना कोई विकेट खोये 120 रन बनाकर मैच अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इंग्लैंड के पास पहली पारी में 42 रन की बढ़त हो गयी है।

रोरी बर्न्स और हसीब हमीद ने पहले विकेट के लिए 2011 के बाद पहली बार भारत के खिलाफ ओपनिंग साझेदारी में 100 से ज्यादा रन जोड़ डाले। हमीद ने 130 गेंदों पर नाबाद 60 रन में

11 चौके लगाए जबकि रोरी बर्न्स ने 125 गेंदों पर नाबाद 52 रन में पांच चौके और एक छक्का लगाया। चारों भारतीय तेज गेंदबाज इशांत शर्मा, जसप्रीत बुमराह , मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज तथा लेफ्ट आर्म स्पिनर रवींद्र जडेजा दोनों बल्लेबाजों पर कोई असर नहीं छोड़ पाए।

लॉर्ड्स में दूसरा टेस्ट 151 रनों के बड़े अंतर से जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का गलत फैसला किया। एंडरसन ने आठ ओवर में मात्र छह रन देकर भारत के शीर्ष तीन बल्लेबाजों लोकेश राहुल , चेतेश्वर पुजारा और कप्तान विराट को पवेलियन की राह दिखाई। तीनों के कैच विकेटकीपर जोस बटलर के हाथों में गए। राहुल पहले ओवर की पांचवीं गेंद पर खाता खोले बिना आउट हुए। पुजारा एक रन बनाकर आउट हुए जबकि विराट ने 17 गेंदों में सात रन बनाकर आउट हुए।

ओपनर रोहित शर्मा 105 गेंदों के संघर्ष में मात्र एक चौके की मदद से सर्वाधिक 19 रन बनाकर क्रैग ओवर्टन की ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद पर पुल खेलने की कोशिश में रॉबिन्सन को कैच दे बैठे। रोहित छठे बल्लेबाज के रूप में आउट हुए। उपकप्तान अजिंक्या रहाणे 54 गेंदों में तीन चौकों की मदद से 18 रन बनाकर चौथे बल्लेबाज के रूप में टीम के 56 के स्कोर पर आउट हुए। ओली रॉबिन्सन ने रहाणे का शिकार किया। रॉबिन्सन ने ही ऋषभ पंत को बटलर के हाथों कैच कराकर पवेलियन की राह दिखाई।

स्पाइसजेट ने बोइंग 737 मैक्स विमान के पट्टेदार एवलॉन के साथ समझौता किया

मुंबई। विमानन कंपनी स्पाइसजेट ने गुरुवार को कहा कि उसने बोइंग 737 मैक्स विमानों के एक पट्टेदार एवोलॉन के साथ ''निपटान समझौता'' किया है।

स्पाइसजेट ने एक बयान में कहा कि उसे उम्मीद है कि ये मैक्स विमान जल्द ही फिर से उड़ान भरेंगे।

कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि विमानन नियामक

डीजीसीए ने अभी तक 737 मैक्स विमानों को फिर से उड़ान भरने की अनुमति देने पर अंतिम फैसला नहीं किया है। मैक्स विमानों से जुड़ी दो घातक दुर्घटनाओं के मद्देनजर इन विमानों पर 2019 में रोक लगा दी गई थी। इस महीने की शुरुआत में यह बताया गया था कि डीजीसीए जांच कर रहा है कि क्या बोइंग 737 मैक्स विमानों को देश में फिर से उड़ान भरने की अनुमति दी जानी चाहिए। अमेरिका और यूरोप में विमानन नियामकों ने पहले ही विमान को व्यापक सुधारों के साथ उड़ान भरने की मंजूरी दे दी है।

भारत में वाहनों के विनिर्माण के लिये व्यापक अवसरः निसान

नईदिल्ली। भारत में वाहन विनिर्माताओं के लिये काफी अवसर हैं और इलेक्ट्रिक गाड़ियां मुख्य स्तंभ है जो देश में वाहन उद्योग में व्यापक बदलाव ला सकते हैं। वाहन कंपनी निसान मोटर कॉरपोरेशन के मुख्य परिचालन अधिकारी अश्विनी गुप्ता ने बृहस्पतिवार को यह कहा।

वाहन कल-पुर्जे बनाने वाली कंपनियों का संगठन एसीएमए (ऑटोमोटिव कम्पोनेन्ट मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के 61वें सालाना सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने उद्योग में बदलाव के लिये भारतीय कंपनियों को कामकाज के विभिन्न स्तरों पर डिजिटलीकरण को अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया।

गुप्ता ने कहा, ''भारत चौथा सबसे बड़ा वाहन बाजार है। पांच से छह साल में, यह तीसरा सबसे बड़ा बाजार हो सकता है। अभी प्रति 1,000 आबादी पर केवल 20 कार हैं। इसको देखते हुए क्षेत्र में काफी अवसर है।''

उन्होंने कहा, ''हमारे समक्ष चुनौती यह है कि हम कैसे इस अवसर का उपयोग करें। मैं एक बार फिर कहूंगा कि विद्युतीकरण मुख्य स्तंभ है और यह निश्चित रूप से भारतीय वाहन उद्योग में बदलाव ला सकता है।''

गुप्ता ने निसान का उदाहरण देते हुए कहा कि 2030 तक कंपनी की 100 प्रतिशत कारों में बिजली से चलने का विकल्प होगा। वहीं यूरोप में यह 2026 तक होगा।

उन्होंने कहा कि 2026 में, इलेक्ट्रिक कारों की लागत, मूल्य बिंदु और उसे चलाने का उत्साह निश्चित रूप से आईसीई (परंपरागत इंजन वाली कार) कारों की तुलना में बेहतर होगा।

आज का राशिफल

मेषः आज विवाहोत्सुकों को जीवनसाथी मिलने का योग है। सामाजिक रूप से आपको यश-कीर्ति मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।

वृषः आज आप किसी भी प्रकार के मानसिक भार से मुक्त हो जाएंगे। शारीरिक रूप से भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मिथुनः आपका आज का दिन मिश्र फलदायी रहेगा। स्वास्थ्य में भी कुछ उतार-चढ़ाव आएगा। धन का व्यय अधिक होगा। संतानों की चिंता सताएगी।

ककर्ः आज के दिन मन को शांत और प्रफुल्लित रखने के लिए ईश्वर का नाम-स्मरण, आध्यात्मिक पठन की प्रवृत्ति ही एकमात्र उपाय है। क्रोध को वश में रखिएगा।

सिंहः स्वास्थ्य की दृष्टि से आज आप प्रसन्न और आनंदित रहेंगे। मित्रों तथा संबंधियों के साथ घूमने-फिरने की योजना बनाएंगे और आनंददायी प्रवास भी कर पाएंगे।

कन्याः आज कार्य सफलता से मानसिक रूप से आप प्रफुल्लित रहेंगे। यश और कीर्ति में भी वृद्धि होगी। मायके से अच्छे समाचार मिलेंगे।

तुलाः अपनी बौद्धिक शक्ति से लेखन कार्य और अन्य सृजनात्मक कार्य करने में आगे बढेंगे। विचारों में आते शीघ्र परिवर्तन से मानसिक रूप से आप स्वस्थ नहीं रह पाएंगे।

वृश्चिकः आज विद्यार्थियों के लिए दिन अनुकूल है। नए वस्त्राभूषण तथा प्रसाधन के पीछे धन का खर्च अधिक होने की संभावना है। आर्थिक योजना बनाना सरल होगा।

धनुः शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य आज बना रहेगा। परिजनों के साथ प्रवास-पर्यटन का आयोजन बनेगा। छोटे प्रवास का योग है।

मकरः आज अधिक वाद-विवाद न करें, वही आप के हित में होगा। धार्मिक कार्यों और उपासना के पीछे धन का खर्च हो सकता है। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे।

कुंभः आज सांसारिक विषयों की बजाए आध्यात्मिक विषयों की तरफ आप का झुकाव अधिक रहेगा। शारीरिक प्रफुल्लता और मानसिक प्रसन्नता दिनभर बनी रहेगी।

मीनः धन के लेन-देन, उगाही या निवेश करते समय सावधानी बरतिएगा। वाणी और क्रोध पर संयम बरतिएगा। अकस्मात से संभलकर चलिएगा।

करीना कपूर ने शुरू की नई पारी

हमारे समय की गेम-चेंजिंग स्टार में से एक, करीना कपूर खान पहली बार एक स्लीक और नए जमाने की थ्रिलर के साथ निर्माता बनने के लिए तैयार हैं. एकता कपूर की बालाजी टेलीफिल्म्स के सहयोग से, अभी तक अनटाइटल्ड यह फिल्म हंसल मेहता द्वारा निर्देशित की जाएगी, जिन्होंने स्कैम 1992 की सफलता के बाद, उद्योग के सबसे समीक्षकों और व्यावसायिक रूप से प्रशंसित निर्देशकों में से एक के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर लिया है.

यह सहयोग दो मजबूत महिलाओं, एकता कपूर और करीना कपूर खान के एक साथ आने का प्रतीक है, दोनों ने अपने स्वयं के मार्ग प्रशस्त किए हैं और अपने रूल बनाते हुए स्ट्रियोटाइप को चुनौती दी है.

दिलचस्प बात यह है कि ब्लॉकबस्टर 'वीरे दी वेडिंग' करीना कपूर खान की उनके बेटे तैमूर के जन्म के बाद पहली फिल्म थी और यह उनके दूसरे बच्चे के बाद उनकी पहली फिल्म होगी, संयोग से, दोनों एकता कपूर के बालाजी टेलीफिल्म्स द्वारा निर्मित हैं.

एक सच्ची जीवन घटना से

प्रेरित, कहानी यूके में स्थापित है और जल्द ही शूटिंग शुरू की जाएगी.

पहली बार निर्माता बनने के लिए उत्साहित, करीना कपूर खान कहती हैं, 'एकता के साथ इस फिल्म में एक निर्माता के रूप में काम करने के लिए बहुत सम्मानित और उत्साहित हूं, जिसे मेरा परिवार वर्षों से जानता है और पहली बार हंसल द्वारा निर्देशित किया जा रहा है.

क्रिस्टेल डिसूजा ने बिग बी के साथ साझा किया अपना यादगार पल

वह अपने सपनों में भी नहीं सोच सकती थी कि भारतीय सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन के साथ वो बॉलीवुड में अपनी शुरूआत करेंगी। चेहरे की अभिनेत्री क्रिस्टल डिसूजा का कहना है कि बिग बी से मिलना और उनके साथ बातचीत शुरू करना उनके लिए काफी नर्वसनेस वाला मूमेंट था, लेकिन बिग बी ने इसे काफी आसान बना दिया था।

क्रिस्टल ने बताया कि मैं आपको बता भी नहीं सकती कि मैं कितनी नर्वस थी और शूटिंग के पहले दिन पहली बार मेरी मां मेरे

साथ आई थी। बेशक, मेरी मां का भी मिस्टर बच्चन से मिलने का सपना था क्योंकि हमारा परिवार बिग बी का फैन हैं। लेकिन जब मैंने पहली बार उन्हें देखा, तो मैं काफी नर्वस हो गई साथ ही परेशान भी। एक पल के लिए मुझे नहीं समझ आ रहा था कि बातचीत कैसे शुरू करूं।

ट्राय करें ओट्स एंड मटर चीला

मटर और ओट्स दोनों ही हेल्दी चीज़ें हैं तो जरा सोचिए इनसे तैयार होने वाली डिश कितनी हेल्दी होगी। तो आज हम आपको इससे चीला बनाने का आइडिया शेयर करने वाले हैं।

सामग्री :

ओट्स- 1/2 कप, उबली हुई हरी मटर- 1/2 कप, अदरक का टुकड़ा- 1 इंच, लहसुन की कलियां- 2-3, हरी मिर्च- 1-2, अजवायन- 1/2 टीस्पून, हींग- 1 चुटकी, नमक स्वादानुसार, देसी घी आवश्यकतानुसार

विधि :

ओट्स को कम से कम 3-4 घंटे के लिए पानी में भिगोकर रखें।

छलनी में डालकर पानी निथार कर अलग रख ले।

अब मिक्सर में ओट्स, उबली मटर, अदरक, लहसुन, हरी मिर्च, अजवायन, हींग और नमक डालकर स्मूद पेस्ट तैयार कर लेंगे।

नॉनस्टिक पैन पर हल्का सा तेल या देसी घी डालें।

अब उस पर एक टेबलस्पून मटर-ओट्स वाला घोल फैलाएं।

मीडियम आंच पर दोनों साइड से क्रिस्पी और सुनहरा होने तक सेंक लें।

हरी चटनी या टोमैटो सॉस के साथ सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य- 182

बाएं से दाएं

1. याद, स्मरण 3. अग्नि, आग, पवित्र करने वाला 6. गौ जाति का नर 8. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 10. मुस्कुराहट, तबस्सुम 11. खारा, नमक के स्वाद जैसा 14. मुख्यभाग, निचोड़ 16. पिंडली व एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हड्डी, गुल्फ 18. अद्भूत, विचित्र 21. सम्राट, बादशाह, नरेश 22. कृति, निर्माण करना, बनाना 23. बड़ी थाली 24. समूह, दल 26. एहसानमंद, कृतज्ञ 27. ध्वनि, सदा 28. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर।

ऊपर से नीचे

2. अपमान, अनादर, अवज्ञा 3. जल, नीर, अम्बु 4. वाणी, वादा, कथन 4. कर्म शब्द का अपभ्रंश, भाग्य 7. लकड़ी का घूमने वाला एक गोल खिलौना, बिजली का बल्ब 9. लोग, प्रजा 10. यात्री, राही, पथिक 12. कीड़ा 13. चोचला, अदा 15. दंड 17. अवैध, अनुचित 18. जो आधिकारिक न हो, जो अधिकार प्राप्त न हो 19. जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, सत्यपरक, वाजिब 20. ताकत, शक्ति 24. प्रश्न, समस्या 25. घटना, घटना का वर्णन 26. एक प्रसिद्ध पक्षी जो रात में विचरण करता है, लक्ष्मीजी की सवारी 27. पानी, चमक।

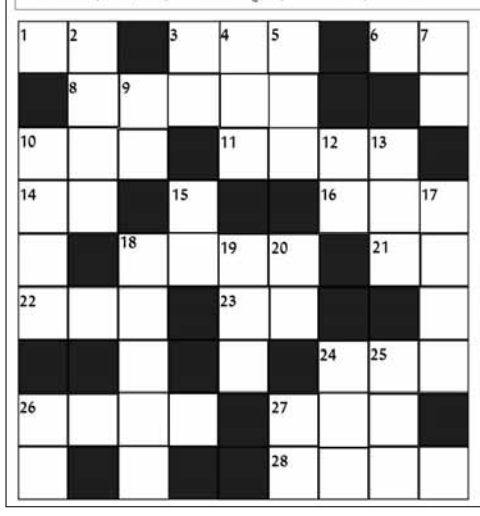

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 181 का हल

टे	ढ़ा	मे	ढ़ा	■	म	हा	र	त
क	■	ह	■	■	■	■	ज	न
■	जा	न	की	■	क	म	नी	य
■	■	त	म	क	ना	■	■	■
म	■	■	त	ह	त	■	दा	ब
सी	मा	■	■	ला	■	स	न	द
हा	थ	म	ल	ना	■	वा	■	च
■	■	द	■	■	घा	ल	मे	ल
■	ब	द	ह	वा	स	■	■	न

सू-दोकू- 182

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.181 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6